भारतीय साहित्य संग्रह

शक्तिदायी विचार

स्वामी विवेकानन्द

शक्तिदायी विचार

Shaktidayee Vichar

by

Swami Vivekananda

स्वामी विवेकानन्द

अनुवादक

श्री कृष्णलाल 'हंस'

978-1-61301-242-0

2014

ई-प्रकाशक:

भारतीय साहित्य संग्रह

http://pustak.org

वक्तव्य

स्वामी विवेकानन्द कृत'शक्तिदायी विचार'का
ई-संस्करण पाठकों के सम्मुख रखते हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक में स्वामीजी के उन चुने हुए सद्वाक्यों एवं विचारों का संग्रह है, जो उन्होंने विभित्र विषयों पर प्रकट किये थे। ये विचार केवल किसी व्यक्ति के लिए ही लाभदायक नहीं, वरन्, समस्त राष्ट्र की उन्नति के लिए भी विशेष हितकर हैं।

ये विचार बड़े ही स्फूर्तिदायक, शक्तिशाली तथा यथार्थ मनुष्यत्व के निर्माण के निमित्त अद्वितीय पथप्रदर्शक हैं। उन लोगों के लिए, जो भारतवर्ष के आध्यात्मिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के इच्छुक हैं, ये विचार विशेष लाभदायक होंगे।

श्री कृष्णलाल'हंस'साहित्यरत्न के हम सभी बड़े आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक को मौलिक अंग्रेजी ग्रन्थ से सफलतापूर्वक अनुवादित किया है। हमें विश्वास है कि स्वामीजी की इस पुस्तक से हिन्दी जनता का विशेष हित होगा।

अनुक्रम

[विश्वास और शक्ति]
[प्रेम और नि:स्वार्थता]
[ईश्वर और धर्म]
[भारत]
[स्फुट]

विश्वास और शक्ति

- तुम प्रभु की सन्तान, अमर आनन्द के हिस्सेदार, पवित्र और पूर्ण हो। ऐ पृथ्वीनिवासी ईश्वरस्वरूप भाइयो! तुम भला पापी? मनुष्य को पापी कहना ही पाप है; यह कथन मानवस्वरूप पर एक लांछन है। ऐ सिहों, आओ और अपने तई भेड़-बकरी होने का का भ्रम दूर कर दो। तुम अमर आत्मा,शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वभाव, शाश्वत और मंगलमय हो। तुम उसके गुलाम नहीं।
- जो अपने आपमें विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है। प्राचीन धर्मों ने कहा है, वह नास्तिक है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता। नया धर्म कहता है, वह नास्तिक है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता।
- विश्वास, विश्वास, अपने आप में विश्वास, ईश्वर में विश्वास यही महानता का रहस्य है। यदि तुम पुराण के तैंतीस करोड़ देवताओं और विदेशियों द्वारा बतलाये हुए सब देवताओं में भी विश्वास करते हो, पर यदि अपने आप में विश्वास नहीं करते, तो तुम्हारी मुक्ति नहीं हो सकती। अपने आप में विश्वास करो, उस पर स्थिर रहो और शक्तिशाली बनो।

- सफलता प्राप्त करने के लिए जबरदस्त सतत प्रयत्न और जबरदस्त इच्छा रखो। प्रयत्नशील व्यक्ति कहता है, "मैं समुद्र पी जाऊँगा, मेरी इच्छा से पर्वत टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।" इस प्रकार की शक्ति और इच्छा रखो, कड़ा परिश्रम करो, तुम अपने उद्देश्य को निश्चित पा जाओगे।

- यह एक बड़ी सचाई है; शक्ति ही जीवन और कमजोरी ही मृत्यु है। शक्ति - परम सुख है, अजर अमर जीवन है। कमजोरी - कभी न हटनेवाला बोझ और यन्त्रणा है; कमजोरी ही मृत्यु है।
- संसार को बस कुछ सौ साहसी स्त्री-पुरुषों की आवश्यकता है। उस साहस का अभ्यास करो, जिसमें सचाई जानने की हिम्मत है, जिसमें जीवन के सत्य को बतलाने की हिम्मत है, जो मृत्यु से नहीं काँपता, मृत्यु का स्वागत करता है, और मनुष्य को बतलाता है कि वह अमर आत्मा है, समस्त विश्व में कोई उसका हनन नहीं कर सकता। तब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे।
- कर्म करना बहुत अच्छा है, पर वह विचारों से आता है....,इसलिए अपने मस्तिष्क को उच्च विचारों और उच्चतम आदर्शों से भर लो, उन्हें रात-दिन अपने सामने रखो; उन्हीं में से महान् कार्यों का जन्म होगा।
- संसार की क्रूरता और पापों की बात मत करो। इसी बात पर खेद करो कि तुम अभी भी क्रूरता देखने को विवश हो। इसी का तुमको दु:ख होना चाहिए कि तुम सब ओर केवल पाप देखने के लिए बाध्य हो। यदि तुम संसार की सहायता करना आवश्यक समझते हो, तो उसकी निन्दा मत करो। उसे और अधिक कमजोर मत बनाओ। पाप, दु:ख आदि सब क्या है? कुछ भी नहीं, वे कमजोरी के ही परिणाम हैं। इस प्रकार के उपदेशों से संसार दिन-प्रतिदिन

अधिकाधिक कमजोर बनाया जा रहा है।

- बाल्यकाल से ही उनके मस्तिष्क में निश्चित, दृढ़ और सहायक विचारों को प्रवेश करने दो। अपने आपको इन विचारों के प्रति उन्मुक्त रखो, न कि कमजोर तथा अकर्मण्य बनानेवाले विचारों के प्रति।
- असफलता की चिन्ता मत करो; वे बिलकुल स्वाभाविक है, वे असफलताएँ जीवन के सौन्दर्य हैं। उनके बिना जीवन क्या होता? जीवन में यदि संघर्ष न रहे, तो जीवित रहना ही व्यर्थ है- इसी संघर्ष में है जीवन का काव्य। संघर्ष और त्रुटियों की परवाह मत करो। मैंने किसी गाय को झूठ बोलते नहीं सुना, पर वह केवल गाय है, मनुष्य कभी नहीं। इसलिए इन असफलताओं पर ध्यान मत दो, ये छोटी फिसलनें हैं। आदर्श को सामने रखकर हजार बार आगे बढ़ने का प्रयत्न करो। यदि तुम हजार बार भी असफल होते हो, तो एक बार फिर प्रयत्न करो।
- विश्व की समस्त शक्तियाँ हमारी हैं। हमने अपने हाथ अपनी आँखों पर रख लिये हैं और चिल्लाते हैं कि सब ओर अँधेरा है। जान लो कि हमारे चारों ओर अँधेरा नहीं है, अपने हाथ अलग करो, तुम्हें प्रकाश दिखाई देने लगेगा, जो पहले भी था। अँधेरा कभी नहीं था, कमजोरी कभी नहीं थी। हम सब मूर्ख हैं जो चिल्लाते हैं कि हम कमजोर हैं, अपवित्र हैं।
- कमजोरी का इलाज कमजोरी का विचार करना नहीं, पर शक्ति का विचार करना है। मनुष्य को शक्ति की शिक्षा दो, जो पहले से ही उनमें है।
- अपने आपमें विश्वास रखने का आदर्श ही हमारा सब से पड़ा सहायक है। सभी क्षेत्रों में यदि अपने आप में विश्वास करना हमें सिखाया जाता और उसका अभ्यास कराया जाता, तो मुझे विश्वास है कि हमारी बुराइयों तथा दु:खों का बहुत बड़ा भाग आज तक मिट गया होता।
- यदि मानवजाति के आज तक के इतिहास में महान् पुरुषों और स्त्रियों के जीवन में सब से बड़ी प्रवर्तक शक्ति कोई है, तो वह आत्माविश्वास ही है। जन्म से ही यह विश्वास रहने के कारण कि वे महान् होने के लिए ही पैदा हुए हैं, वे महान् बने।
- मनुष्य को, वह जितना नीचे जाता है जाने दो; एक समय ऐसा अवश्य आएगा, जब वह ऊपर उठने का सहारा पाएगा और अपने आप में विश्वास करना सीखेगा। पर हमारे लिए यही अच्छा है कि हम इसे पहले से ही जान लें। अपने आप में विश्वास करना सीखने के लिए हम इस प्रकार के कटु अनुभव क्यों करें?
- हम देख सकते हैं कि एक तथा दूसरे मनुष्य के बीच अन्तर होने का कारण उसका अपने आप में विश्वास होना और न होना ही है। होने से सब कुछ हो सकता है। मैंने अपने जीवन में इसका अनुभव किया है, अब भी कर रहा हूँ और जैसे जैसे मैं बड़ा होता-जा रहा हूँ, मेरा विश्वास और भी दृढ़ होता जा रहा

है।

- क्या तुम जानते हो, तुम्हारे भीतर अभी भी कितना तेज, कितनी शक्तियाँ छिपी हुई हैं? क्या कोई वैज्ञानिक भी इन्हें जान सका है? मनुष्य का जन्म हुए लाखों वर्ष हो गये, पर अभी तक उसकी असीम शक्ति का केवल एक अत्यन्त क्षुद्र भाग ही अभिव्यक्त हुआ है। इसलिए तुम्हें यह न कहना चाहिए कि तुम शक्तिहीन हो। तुम क्या जानों कि ऊपर दिखाई देनेवाले पतन की ओट में शक्ति की कितनी सम्भावनाएँ हैं? जो शक्ति तुममें है, उसके बहुत ही कम भाग को तुम जानते हो। तुम्हारे पीछे अनन्त शक्ति और शान्ति का सागर है।
- 'जड़' यदि शक्तिशाली है, तो 'विचार' सर्वशक्तिमान है। इस विचार को अपने जीवन में उतारो और अपने आपको सर्वशक्तिमान, महिमान्वित और गौरवसम्पन्न अनुभव करो। ईश्वर करे, तुम्हारे मस्तिष्क में किसी कुसंस्कार को स्थान न मिले। ईश्वर करे, हम जन्म से ही कुसंस्कार डालनेवाले वातावरण में न रहें और कमजोर तथा बुराई के विचारों से बचें।
- तुम अपने जीवाणुकोष (Amoeba) की अवस्था से लेकर इस मनुष्य-शरीर तक की अवस्था का निरीक्षण करो; यह सब किसने किया?- तुम्हारी अपनी इच्छाशक्ति ने। यह इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान है, क्या यह तुम अस्वीकार कर सकते हो? जो तुम्हें यहाँ तक लायी, वही अब भी तुम्हें और ऊँचे पर ले जा सकती है। तुम्हे केवल चरित्रवान होने और अपनी इच्छाशक्ति को अधिक बलवती बनाने की ही आवश्यकता है।
- उपनिषदों में यदि एक ऐसा शब्द है, जो बज्रवेग से अज्ञान-राशि के ऊपर पतित होता है, उसे बिलकुल उड़ा देता है, तो वह है 'अभी:'-निर्भयता। संसार को यदि किसी एक धर्म की शिक्षा देनी चाहिए, तो वह है 'निर्भीकता'। यह सत्य है कि इस ऐहिक जगत में, अथवा आध्यात्मिक जगत् में भय ही पतन तथा पाप का कारण है। भय से ही दु:ख होता है, यही मृत्यु का कारण है तथा इसी के कारण सारी बुराई तथा पाप होता है।
- अपने स्नायु शक्तिशाली बनाओ। हम लोहे की मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु चाहते हैं। हम बहुत रो चुके - अब और अधिक न रोओ, वरन् अपने पैरों पर खड़े होओ और मनुष्य बनो।
- सब से पहले हमारे तरुणों को मजबूत बनना चाहिए। धर्म इसके बाद की वस्तु है। मेरे तरुण मित्रों! शक्तिशाली बनो, मेरी तुम्हें यही सलाह है। तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल के द्वारा ही स्वर्ग के अधिक समीप पहुँच सकोगे। ये कुछ कड़े शब्द हैं, पर मै उन्हें कहना चाहता हूँ, क्योंकि मै तुम्हें प्यार करता हूँ। मै जानता हूँ कि काँटा कहाँ चुभता है। मुझे इसका कुछ अनुभव है। तुम्हारे स्नायु और मांसेपशियाँ अधिक मजबूत होने पर तुम गीता अधिक अच्छी तरह समझ सकोगे। तुम, अपने शरीर में शक्तिशाली रक्त प्रवाहित होने पर, श्रीकृष्ण के तेजस्वी गुणों और उनकी अपार शक्ति को अधिक समझ सकोगे। जब तुम्हारा शरीर मजबूती से तुम्हारे पैरों पर खडा रहेगा और तुम

अपने को 'मनुष्य' अनुभव करोगे, तब तुम उपनिषद् और आत्मा की महानता को अधिक अच्छा समझ सकोगे।

- 'मनुष्य' - केवल 'मनुष्य' ही हमें चाहिए, फिर हरएक वस्तु हमें प्राप्त हो जाएगी। हमें चाहिए केवल दृढ़ तेजस्वी, आत्मविश्वासी तरुण - ठीक ठीक सच्चे हृदयवाले युवक। यदि सौ भी ऐसे व्यक्ति हमें मिल जाएँ, तो संसार आन्दोलित हो उठेगा - उसमे विशाल परिवर्तन हो जाएगा।
- इच्छाशक्ति ही सब से अधिक बलवती है। इसके सामने हर एक वस्तु झुक सकती है, क्योंकि वह ईश्वर और स्वयं ईश्वर से ही आती है; पवित्र और दृढ़ इच्छाशक्ति सर्वशक्तिमान है। क्या तुम इसमें विश्वास करते हो?
- हाँ, मैं जैसे-जैसे बड़ा होता जाता हूँ वैसे ही वैसे मुझे सब कुछ 'मनुष्यत्व' में ही निहित मालूम पड़ता है। यह मेरी नयी शिक्षा है। बुराई भी करो, तो 'मनुष्य' की तरह। यदि आवश्यक ही हो, तो निर्दयी भी बनो, पर उच्च स्तर पर।

प्रेम और नि:स्वार्थता

- नि:स्वार्थता अधिक लाभदायक है, किन्तु लोगों में उसका अभ्यास करने का धैर्य नहीं है।
- उच्च स्थान पर खड़े होकर और हाथ में कुछ पैसे लेकर यह न कहो-"ऐ भिखारी, आओ यह लो।" परन्तु इस बात के लिए उपकार मानो कि तुम्हारे सामने वह गरीब है, जिसे दान देकर तुम अपने आप की सहायता कर सकते हो। पानेवाले का सौभाग्य नहीं, पर वास्तव में देनेवाले का सौभाग्य है। उसका आभार मानो कि उसने तुम्हें संसार में अपनी उदारता और दया प्रकट करने का अवसर दिया और इस प्रकार तुम शुद्ध और पूर्ण बन सके।
- दूसरों की भलाई करने का अनवरत प्रयत्न करते हुए हम अपने आपको भूल जाने का प्रयत्न करते हैं। यह अपने आपको भूल जाना एक ऐसा बड़ा सबक है, जिसे हमें अपने जीवन में सीखना है। मनुष्य मूर्खता से यह सोचने लगता है कि वह अपने को सुखी बना सकता है, पर वर्षों के संघर्ष के पश्चात् अन्त में वह कहीं समझ पाता है कि सच्चा सुख स्वार्थ के नाश में है और उसे अपने आपके अतिरिक्त अन्य कोई सुखी नहीं बना सकता।
- स्वार्थ ही अनैतिकता और स्वार्थहीनता ही नैतिकता है।
- स्मरण रखो, पूरा जीवन देने के लिए ही है। प्रकृति देने के लिए विवश करेगी; इसीलिए अपनी खुशी से ही दो....। तुम संग्रह करने के लिये ही जीवन धारण करते हो। मुट्ठी-बँधे हाथ से तुम बटोरना चाहते हो, पर प्रकृति तुम्हारी गर्दन दबाती है और तुम्हारे हाथ खुल जाते हैं। तुम्हारी इच्छा हो या न हो, तुम्हें देना ही पड़ता है। जैसे ही तुम कहते हो, 'मैं नहीं दूँगा', एक घूँसा पडता है और तुम्हें चोट लगती है। ऐसा कोई भी नहीं है, जिसे अन्त में सब कुछ त्यागना न

पड़े।

- शुद्ध बनना और दूसरों की भलाई करना ही सब उपासनाओं का सार है। जो गरीबों, निर्बलों और पीडितों में शिव को देखता है, वही वास्तव में शिव का उपासक है; पर यदि वह केवल मूर्ति में ही शिव को देखता है, तो यह उसकी उपासना का आरम्भ मात्र है।
- नि:स्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जो जितना अधिक नि:स्वार्थी है, वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है.....। और वह यदि स्वार्थी है, तो उसने चाहे सभी मन्दिरों में दर्शन किये हों, चाहे सभी तीर्थों का भ्रमण किया हो, चाहे वह रँगे हुए चीते के समान हो, फिर भी वह शिव से बहुत दूर है।
- प्रेम – केवल प्रेम का ही मैं प्रचार करता हूँ, और मेरे उपदेश वेदान्त की समता और आत्मा की विश्वव्यापकता - इन्हीं सत्यों पर प्रतिष्ठित हैं।
- पहले रोटी और फिर धर्म। सब बेचारे दरिद्री भूखों मर रहे हैं, तब हम उनमें व्यर्थ ही धर्म को ठूँसते हैं। किसी भी मतवाद से भूख की ज्वाला शान्त नहीं हो सकती....। तुम लाखों सिद्धान्तों की चर्चा करो, करोड़ों सम्प्रदाय खड़े कर लो, पर जब तक तुम्हारे पास संवेदनशील हृदय नहीं है, जब तक तुम उन गरीबों के लिए वेदों की शिक्षा के अनुरूप तड़प नहीं उठते, जब तक उन्हें अपने शरीर का ही अंग नहीं समझते, जब तक यह अनुभव नहीं करते कि तुम और वे-दरिद्र और धनी, सन्त और पापी-सभी उस एक असीम पूर्ण के, जिसे तुम ब्रह्म कहते हो, अंश हैं, तब तक तुम्हारी धर्म-चर्चा व्यर्थ है।
- दुखियों के दु:ख का अनुभव करो और उनकी सहायता करने को आगे बढ़ो, भगवान् तुम्हें सफलता देंगे ही। मैंने अपने हृदय में इस भार को और मस्तिष्क में इस विचार को रखकर बारह वर्ष तक भ्रमण किया। मैं तथाकथित बड़े और धनवान व्यक्तियों के दरवाजों पर गया। वेदना-भरा हृदय लेकर और संसार का आधा भाग पार कर, सहायता प्राप्त करने के लिए मैं इस देश (अमरीका) में आया। ईश्वर महान् है। जानता हूँ, वह मेरी सहायता करेगा। मैं इस भूखण्ड में शीत से या भूख से भले ही मर जाऊँ, पर हे तरुणो, मैं तुम्हारे लिए एक बसीयत छोड़ जाता हूँ; और वह है यह सहानुभूति – गरीबों, अज्ञानियों, और दु:खियों की सेवा के लिए प्राणपण से चेष्टा।
- मनुष्य अल्पायु है और संसार की सब वस्तुएँ वृथा तथा क्षणभंगुर हैं, पर वे ही जीवित हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं; शेष सब तो जीवित की अपेक्ष मृत ही अधिक हैं।
- मैं उस धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता, जो विधवा के आँसू पोंछने या अनाथों को रोटी देने में असमर्थ है।
- हे वत्स, प्रेम कभी विफल नहीं होता; आज कल या युगों के पश्चात कभी न कभी सत्य की विजय निश्चय होगी। प्रेम विजय प्राप्त करेगा। क्या तुम अपने साथियों से प्रेम करते हो?
- तुम्हें ईश्वर को ढूँढ़ने कहाँ जाना है? क्या गरीब, दु:खी और निर्बल ईश्वर नहीं

हैं? पहले उन्हीं की पूजा क्यों नहीं करते? तुम गंगा के किनारे खड़े होकर कुआँ क्यों खोदते हो?

- प्रेम की सर्वशक्तिमत्ता पर विश्वास करो।......क्या तुममें प्रेम है? तुम सर्वशक्तिमान हो। क्या तुम पूर्णत: नि:स्वार्थी हो? यदि हाँ, तो तुम अजेय हो। चरित्र ही सर्वत्र फलदायक है।
- मेरा हृदय भावनाओं से इतना भरा हुआ है कि मैं उन्हें व्यक्त करने में असमर्थ हूँ, तुम उसे जानते हो, तुम उसकी कल्पना कर सकते हो। जब तक लाखों व्यक्ति भूखे और अज्ञानी हैं, तब तक है मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता हूँ, जो उनके बल पर शिक्षित बना, पर आज उनकी ओर ध्यान तक नहीं देता। मैं उन मनष्यों को हतभाग्य कहता हूँ, जो अपने ऐश्वर्य का वृथा गर्व करते हैं और जिन्होंने गरीबों को, पददलितों को पीसकर धन एकत्र किया है पर जो बीस करोड़ व्यक्तियों के लिए कुछ भी नहीं करते, जो भूखे जंगली मनुष्यों की तरह जीवन बिता रहे हैं। भाइयो, हम गरीब हैं, नगण्य हैं, पर ऐसे ही व्यक्ति सदैव परमात्मा के साधन-स्वरूप रहे हैं।
- मुझे मुक्ति या भक्ति की परवाह नहीं है, मैं सैकडो-हजारों नरक में ही क्यों न जाऊँ, वसन्त की तरह मौन दूसरों की सेवा करना ही मेरा धर्म है।
- मैं मृत्युपर्यन्त अनवरत कार्य करता रहूँगा और मृत्यु के पश्चात भी मैं दुनिया की भलाई के लिए कार्य करूँगा। असत्य की अपेक्षा सत्य अनन्त गुना अधिक प्रभावशाली है; उसी प्रकार अच्छाई भी बुराई से। यदि ये गुण तुममें विद्यमान हैं, तो उनका प्रभाव आप ही आप प्रकट होगा।
- विकास ही जीवन और संकोच ही मृत्यु है। प्रेम ही विकास और स्वार्थपरता संकोच है। इसलिए प्रेम ही जीवन का मूलमन्त्र है। प्रेम करनेवाला ही जीता है और स्वार्थी मरता रहता है। इसलिए प्रेम प्रेम ही के लिए करो; क्योंकि एकमात्र प्रेम ही जीवन का ठीक वैसा ही आधार है, जैसा कि जीने के लिए श्वास लेना। नि:स्वार्थ प्रेम, नि:स्वार्थ कार्य आदि का यही रहस्य है।
- संसार को कौन प्रकाश देगा? अतीत का आधार त्याग ही था और भविष्य में भी वही रहेगा। पृथ्वी के वीरतम और महानतम पुरुषों को दूसरों की - सब की भलाई के लिए अपनी बलि देनी पड़ेगी। अनन्त प्रेम और अपार दयालुता-सम्पन्न सैकड़ों बुद्धों की आवश्यकता है।
- मैं पुन: पुन: जन्म धारण करूँ और हजारों मुसीबतें सहता रहूँ, जिससे मैं उस परमात्मा को पूज सकूँ, जो सदा ही वर्तमान है, जिस अकेले में मैं सर्वदा विश्वास रखता हूँ, जो समस्त जीवों का समष्टिस्वरूप है और जो दुष्टों के रूप में, पीड़ितों के रूप में तथा सब जातियों, सब वर्गों के गरीबों में प्रकट हुआ है। वही मेरा विशेष आराध्य है।
- हमारा सर्वश्रेष्ठ कार्य तभी होगा, हमारा सर्वश्रेष्ठ प्रभाव तभी पड़ेगा, जब हममें 'अहं-भाव' लेशमात्र भी न रहेगा।
- आज संसार के सब धर्म प्राणहीन एवं परिहास की वस्तु हो गये हैं। आज जगत्

का सच्चा अभाव है चरित्र। संसार को उनकी आवश्यकता है जिनका जीवन उत्कट प्रेम तथा नि:स्वार्थपरता से पूर्ण है। वह प्रेम प्रत्येक शब्द को वज्रवत् शक्ति प्रदान करेगा।

- श्रेष्ठतम जीवन का पूर्ण प्रकाश है आत्मत्याग, न कि आत्माभिमान।
- जहाँ यथार्थ धर्म है, वहीं प्रबलतम आत्मबलिदान है। अपने लिए कुछ मत चाहो, दूसरों के लिए ही सब कुछ करो-यही है ईश्वर में तुम्हारे जीवन की स्थिति, गति तथा प्राप्ति।

ईश्वर और धर्म

- प्रत्येक जीव ही अव्यक्त ब्रह्म है। बाह्म एवं अन्त:प्रकृति, दोनों का नियमन कर, इस अन्तर्निहित ब्रह्म–स्वरुप को अभिव्यक्त करना ही जीवन का ध्येय है। कर्म, भक्ति, योग या ज्ञान के द्वारा, इनमें से किसी एक के द्वारा, या एक से अधिक के द्वारा, या सब के सम्मिलन के द्वारा, यह ध्येय प्राप्त कर लो और मुक्त हो जाओ। यही धर्म का सर्वस्व है। मतमतान्तर, विधि या अनुष्ठान, ग्रन्थ, मन्दिर–ये सब गौण हैं।
- यदि ईश्वर है, तो हमें उसे देखना चाहिए; अन्यथा उन पर विश्वास न करना ही अच्छा है। ढोंगी बनने की अपेक्षा स्पष्ट रूप से नास्तिक बनना अच्छा है।
- अभ्यास अत्यावश्यक है। तुम प्रतिदिन घण्टों बैठकर मेरा उपदेश सुनते, रहो, पर यदि तुम उसका अभ्यास नहीं करते, तो एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकते। यह सब तो अभ्यास पर ही निर्भर है। जब तक हम इन बातों का अनुभव नहीं करते, तब तक इन्हें नहीं समझ सकते। हमें इन्हें देखना और अनुभव करना पड़ेगा। सिद्धान्तों और उनकी व्याख्याओं को केवल सुनने से कुछ न होगा।
- एक विचार ले लो उसी एक विचार के अनुसार अपने जीवन को बनाओ; उसी को सोचो, उसी का स्वप्न देखो और उसी पर अवलम्बित रहो। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, स्नायुओं और शरीर के प्रत्येक भाग को उसी विचार से ओतप्रोत होने दो और दूसरे सब विचारों को अपने से दूर रखो। यही सफलता का रास्ता है और यही वह मार्ग है, जिसने महान् धार्मिक पुरुषों का निर्माण किया है।
- ये महामानव असामान्य नहीं थे; वे तुम्हारे और हमारे समान ही मनुष्य थे। पर वे महान् योगी थे। उन्होंने यही ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर ली थी; हम और तुम भी इसे प्राप्त कर सकते हैं। वे कोई निशेष व्यक्ति नहीं थे। एक मनुष्य का उस स्थिति में पहुँचना ही इस बात का प्रमाण है कि उसकी प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य के लिए सम्भव है। सम्भव ही नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य अन्त में उस स्थिति को प्राप्त करेगा ही, और यही है धर्म।
- ईश्वर मुक्तिस्वरूप है, प्रकृति का नियन्ता है। तुम उसे मानने से इन्कार नहीं कर सकते। नहीं, क्योंकि तुम स्वतन्त्रता के भाव के बिना न कोई कार्य कर सकते हो, न जी सकते हो।
- कोई भी जीवन असफल नहीं हो सकता; संसार में असफल कही जानेवाली कोई वस्तु है ही नहीं। सैकड़ों बार मनुष्य को चोट पहुँच सकती है, हजारों बार वह पछाड़ खा सकता है, पर अन्त में वह यही अनुभव करेगा कि वह स्वयं ही ईश्वर है।
- धर्म मतवाद या बैद्धिक तर्क में नहीं है, वरन् आत्मा की ब्रह्मस्वरूपता को जान लेना, तद्रूप हो जाना - उसका साक्षात्कार, यही धर्म है।
- ईसा के इन शब्दों को स्मरण रखो-"माँगो, वह तुम्हें मिलेगा; खटखटाओ और

वह तुम्हारे लिए खुल जाएगा।”ये शब्द पूर्ण रूप से सत्य हैं, न आलंकारिक हैं, न काल्पनिक।

- बाह्यप्रकृति पर विजय प्राप्त करना बहुत अच्छी और बहुत बड़ी बात है, पर अन्त:प्रकृति को जीत लेना इससे भी बडी बात है......। अपने भीतर के‘मनुष्य’को वश में कर लो, मानव-मन के सूक्ष्म कार्यों के रहस्य को समझ लो और उसके आश्चर्यजनक गुप्त भेद को अच्छी तरह जान लो- ये बातें धर्म के साथ अच्छेद्य भाव से सम्बद्ध हैं।
- जीवन और मृत्यु में, सुख और दु:ख में ईश्वर समान रूप से विद्यमान है। समस्त विश्व ईश्वर से पूर्ण हैं। अपने नेत्र खोलो और उसे देखो।
- ईश्वर की पूजा करना अन्तर्निहित आत्मा की ही उपासना है।
- धर्म की प्रत्यक्ष अनुभूति हो सकती है क्या तुम इसके लिए तैयार हो? यदि हाँ, तो तुम उसे अवश्य प्राप्त कर सकते हो, और तभी तुम यथार्थ धार्मिक होंगे। जब तक तुम इसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर लेते, तुममें और नास्तिकों में कोई अन्तर नहीं। नास्तिक ईमानदार है, पर वह मनुष्य जो कहता है कि वह धर्म में विश्वास रखता है, पर कभी उसे प्रत्यक्ष करने का प्रयत्न नहीं करता, ईमानदार नहीं है।
- मैं अभी तक के सभी धर्मों को स्वीकार करता हूँ और उन सब की पूजा करता हूँ, मैं उनमें से प्रत्येक के साथ ईश्वर की उपासना करता हूँ: वे स्वयं चाहे किसी भी रूप में उपासना करते हों। मैं मुसलमानों की मसजिद में जाऊँगा, मै ईसाइयों के गिरजा में क्रास के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करूँगा, मै बौद्ध-मन्दिरों में जाकर बुद्ध और उनकी शिक्षा की शरण लूँगा। जंगल में जाकर हिन्दुओं के साथ ध्यान करूँगा, जो हृदयस्थ ज्योतिस्वरुप परमात्मा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं।
- यह धर्म उसके द्वारा प्राप्त किया जाता है, जिसे हम भारत में‘योग’या ‘एकत्व’ कहते हैं। यह योग कर्मयोगी के लिए मनुष्य और मनुष्य जाति के एकत्व के रूप में, राजयोगी के लिए जीव तथा ब्रह्म के एकत्व के रूप में, भक्त के लिए प्रेमस्वरुप भगवान् तथा उसके स्वयं के एकत्व के रूप में और ज्ञानयोगी के लिए बहुत्व में एकत्व के रुप प्रकट होता है। यही है योग का अर्थ।
- अब प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में धर्म का कोई उपयोग है? हाँ, वह मनुष्य को अमर बना देता है, उसने मनुष्य के निकट उसके यथार्थ स्वरूप को प्रकाशित किया है और वह मनुष्य को ईश्वर बनाएगा। यह है धर्म की उपयोगिता। मानव समाज से धर्म पृथक् कर लो, तो क्या रह जाएगा? कुछ नहीं, केवल पशुओं का समूह।
- तुम्हारी सहायता कौन करेगा? तुम स्वयं ही विश्व के सहायता-स्वरूप हो। इस विश्व की कौनसी वस्तु तुम्हारी सहायता कर सकती है। तुम्हारी सहायता करनेवाला मनुष्य, ईश्वर या प्रेतात्मा कहाँ है? तुम्हें कौन पराजित कर सकता है? तुम स्वयं ही विश्वस्रष्टा भगवान् हो, तुम किससे सहायता लोगे? सहायता

और कहीं से नहीं, पर अपने आप से ही मिली है और मिलेगी। अपनी अज्ञानता की स्थिति में तुमने जितनी प्रार्थना की और उसका तुम्हें जो उत्तर मिला, तुम समझते रहे कि वह उत्तर किसी अन्य व्यक्ति ने दिया है, पर वास्तव में तुम्हीं ने अनजाने उन प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है।

- ग्रन्थों के अध्ययन से कभी कभी हम भ्रम में पड़ जाते हैं कि उनसे हमें आध्यात्मिक सहायता मिलती है; पर यदि हम अपने ऊपर उन ग्रन्थों के अध्ययन से पड़नेवाले प्रभाव का विश्लेषण करें, तो ज्ञात होगा कि अधिक से अधिक हमारी बुद्धि पर ही उसका प्रभाव पडा है, न कि हमारे अन्तरात्मा पर। आध्यात्मिक विकास के लिए प्रेरक-शक्ति के रूप में ग्रन्थों का अध्ययन अपर्याप्त है, क्योंकि यद्यपि हममें से प्राय: सभी आध्यात्मिक विषयों पर अत्यन्त आश्चर्यजनक भाषण दे सकते हैं, पर जब प्रत्यक्ष कार्य तथा वास्तविक आध्यात्मिक जीवन बिताने की बात आती है, तब अपने को बुरी तरह अयोग्य पाते हैं। आध्यात्मिक जागृति के लिए ब्रह्मनिष्ठ गुरु से प्रेरक-शक्ति प्राप्त होनी चाहिए।
- एकमात्र ईश्वर, आत्मा और आध्यात्मिकता ही सत्य हैं- शक्ति-स्वरूप हैं। केवल उन्हीं का आश्रय लो।
- संसार में अनेक धर्म हैं, यद्यपि उनकी उपासना के नियम भिन्न हैं, तथापि वे वास्तव में एक ही हैं।
- ध्यान ही महत्त्वपूर्ण बात है। ध्यान लगाओ। ध्यान सब से बड़ी बात है। आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठतम-निकटतम उपाय है। हमारे दैनिक जीवन में यही एक क्षण है, जब हम सांसारिकता से पृथक् रह पाते हैं; इसी क्षण में आत्मा अपने आप में ही लीन रहती है, अन्य सब विचारों से मुक्त रहती है-यही है आत्मा का आश्चर्यजनक प्रभाव।
- जो अपने आपको ईश्वर को समर्पित कर देते हैं, वे तथाकथित कर्मियों की अपेक्षा संसार का अधिक हित करते हैं। जिस व्यक्ति ने अपने को पूर्णत: शुद्ध कर लिया है, वह उपदेशकों के समूह की अपेक्षा अधिक सफलतापूर्वक कार्य करता है। चित्तशुद्धि और मौन से ही शब्द में शक्ति आती है।
- हमें आज जिस बात को जानने की आवश्यकता है वह है ईश्वर- हम उसे सर्वत्र देख और अनुभव कर सकते हैं।
- 'भोजन, भोजन' चिल्लाने और उसे खाने तथा 'पानी, पानी' कहने और उसे पीने में बहुत अन्तर है। इसी प्रकार केवल 'ईश्वर, ईश्वर' रटने से हम उसका अनुभव करने की आशा नहीं कर सकते। हमें उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए, साधना करनी चाहिए।
- बुराईयों के बीच भी कहो-'मेरे प्रभु, मेरे प्रियतम।' मृत्यु की यन्त्रणा में भी कहो-'मेरे प्रभु, मेरे प्रियतम।' संसार की समस्त विपत्तियों में भी कहो-'मेरे प्रभु, मेरे प्रियतम! तू यहाँ है, मैं तुझे देखता हूँ। तू मेरे साथ है, मैं तुझे अनुभव करता हूँ मैं तेरा हूँ, मुझे सहारा दे। मैं संसार का नहीं, पर केवल तेरा हूँ, तू

मुझे मत त्यागा।' हीरों की खान को छोड़कर काँच की मणियों के पीछे मत दौड़ो। यह जीवन एक अमूल्य सुयोग है। क्या तुम सांसरिक सुखों की खोज करते हो?- प्रभु ही समस्त सुख के स्रोत हैं। उसी उच्चतम को खोजो, उसी को अपना लक्ष्य बनाओ और तुम अवश्य उसे प्राप्त करोगे।

भारत

- समस्त संसार हमारी मातृभमि का महान् ऋणी है। किसी भी देश को ले लीजिए, इस जगत् में एक भी जाति ऐसी नहीं है, जिसका संसार उतना ऋणी हो, जितना कि वह यहाँ के धैर्यशील और विनम्र हिन्दुओं का है।
- अनेकों के लिए भारतीय विचार, भारतीय रीति-रिवाज, भारतीय दर्शन, भारतीय साहित्य प्रथम दृष्टि में ही घृणास्पद प्रतीत होते हैं, पर यदि वे सतत प्रयत्न करें, पढ़ें तथा इन विचारों में निहित महान् तत्त्वों से परिचित हो जाएँ, तो परिणामस्वरूप उनमें से निन्यानबे प्रतिशत आनन्द से विभोर होकर उन पर मुग्ध हो जाएँगे।
- पर जैसे जैसे मैं बड़ा होता हूँ, मैं इन प्राचीन भारतीय संस्थाओं को अधिक अच्छी तरह समझता जा रहा हूँ। एक समय था, जब मैं सोचता था कि उनमें से अनेक संस्थाएँ निरुपयोगी और व्यर्थ हैं, पर जैसे जैसे मैं बडा होता जा रहा हूँ, मुझे इनकी निन्दा करने में अधिकाधिक संकोच मालूम पड़ता है, क्योंकि इनमें से प्रत्येक, शताब्दियों के अनुभव का साकार स्वरूप है।
- मेरी बात पर विश्वास कीजिए। दूसरे देशों में धर्म की केवल चर्चा ही होती है, पर ऐसे धार्मिक पुरुष, जिन्होंने धर्म को अपने जीवन में परिणत किया है, जो स्वयं साधक हैं, केवल भारत में ही हैं।
- मैंने कहा कि अभी भी हमारे पास कुछ ऐसी बातें हैं, जिनकी शिक्षा हम संसार को दे सकते हैं। यही कारण है कि सैकड़ों वर्ष तक अत्याचारों को सहने, लगभग हजार वर्ष तक विदेशी शासन में रहने और विदेशियों द्वारा पीड़ित होने पर भी यह देश आज तक जीवित रहा है। उसके अभी भी अस्तित्व में रहने का कारण यही है कि वह सदैव और अभी भी ईश्वर का आश्रय लिये हुए है, तथा धर्म एवं आध्यात्मिकता के अमूल्य भण्डार का अनुसरण करता आया है।
- हमारे इस देश में अभी भी धर्म और आध्यात्मिकता विद्यमान है, जो मानो ऐसे स्रोत हैं, जिन्हें अबाध गति से बढ़ते हुए समस्त विश्व को अपनी बाढ़ से आप्लावित कर पाश्चात्य तथा अन्य देशों को नवजीवन तथा नवशक्ति प्रदान करनी होगी। राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं और सामाजिक कपटों के कारण ये सब देश आज अर्धमृत हो गये है, पतन की चरम सीमा पर पहुँच चुके हैं, उनमें अराजकता छा गयी है।
- पर ध्यान रखो, यदि तुम इस आध्यात्मिकता का त्याग कर दोगे और इसे एक ओर रखकर पश्चिम की जड़वादपूर्ण सभ्यता के पीछे दौड़ोगे, तो परिणाम यह होगा कि तीन पीढियों में तुम एक मृत जाति बन जाओगे; क्योंकि इससे राष्ट्र की रीढ़ टूट जाएगी, राष्ट्र की वह नींव जिस पर इसका निर्माण हुआ है, नीचे धँस जाएगी और इसका फल सर्वांगीण विनाश होगा।
- भौतिक शक्ति का प्रत्यक्ष केन्द्र यूरोप, यदि आज अपनी स्थिति में परिवर्तन करने में सतर्क नहीं होता, यदि वह अपना आदर्श नहीं बदलता और अपने

जीवन को आध्यात्मिकता पर आधारित नहीं करता, तो पचास वर्ष के भीतर वह नष्ट-भ्रष्ट होकर धूल में मिल जाएगा और इस स्थिति में इसे बचानेवाला यदि कोई है तो वह है उपनिषदों का धर्म।

- हमारे घमण्डी रईस-पूर्वज हमारे देश की सर्वसाधारण जनता को अपने पैरों से तब तक कुचलते रहे, जब तक कि वे निस्सहाय नहीं हो गये जब तक कि वे बेचारे गरीब प्राय: वह तक भूल नहीं गये कि वे मनुष्य हैं। वे शताब्दियों तक केवल लकडी काटने और पानी भरने को इस तरह विवश किये गये कि उनका विश्वास हो गया कि वे गुलाम के रूप में ही जन्मे हुए हैं, लकडी काटने और पानी भरने के लिए ही पैदा हुए हैं।
- उपनिषदों के सत्य तुम्हारे सामने हैं। उन्हें स्वीकार करो, उनके अनुसार अपना जीवन बनाओ, और इसी से शीघ्र ही भारत का उद्धार होगा।
- क्या तुम्हें खेद होता है? क्या तुम्हें इस बात पर कभी खेद होता है कि देवताओं और ऋषियों के लाखों वंशज आज पशुवत् हो गये हैं? क्या तुम्हें इस बात पर दु:ख होता है कि लाखों मनुष्य आज भूख की ज्वाला से तड़प रहे हैं और सदियों से तड़पते रहे हैं? क्या तुम अनुभव करते हो कि अज्ञानता सघन मेघों की तरह इस देश पर छा गयी है? क्या इससे तुम छटपटाते हो? क्या इससे तुम्हारी नींद उचट जाती है? क्या यह भावना मानो तुम्हारी शिराओं में से बहती हुई, तुम्हारे हृदय की धड़कन के साथ एकरूप होती हुई तुम्हारे रक्त में भिद गयी है? क्या इसने तुम्हें लगभग पागल सा बना दिया है? सर्वनाश के दु:ख की इस भावना से क्या तुम बेचैन हो?और क्या इससे तुम अपने नाम, यश, स्त्री-बच्चे, सम्पत्ति और यहाँ तक कि अपने शरीर की सुध-बुध भूल गये हो? क्या तुम्हें ऐसा हुआ है? - देशभक्त होने की यही है प्रथम सीढ़ी केवल प्रथम सीढ़ी।
- आओ, मनुष्य बनो। अपनी संकीर्णता से बाहर आओ और अपना दृष्टिकोण व्यापक बनाओ। देखो, दूसरे देश किस तरह आगे बढ़ रहे हैं। क्या तुम मनुष्य से प्रेम करते हो? क्या तुम अपने देश को प्यार करते हो? तो आओ, हम उच्चतर तथा श्रेष्ठतर वस्तुओं के लिए प्राणपण से यत्न करें। पीछे मत देखो; यदि तुम अपने प्रियतमों तथा निकटतम सम्बन्धियों को भी रोते देखो तो भी नहीं। पीछे मत देखो, आगे बढो।
- भारत के प्रति पूर्ण प्रेम, देशभक्ति और पूर्वजों के प्रति पूर्ण सम्मान रखते हुए भी मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि हमें अभी बहुतसी बातें दूसरे देशों से सीखनी हैं। हम भारतेतर देशों के बिना कुछ नहीं कर सकते, यह हमारी मूर्खता थी कि हमने सोचा, हम कर सकेंगे, और परिणाम यह हुआ कि हमें लगभग एक हजार वर्ष की दासता दण्ड़ के रूप में स्वीकार करनी पड़ी। हमने बाहर जाकर दूसरे देशों से अपने देश की बातों की तुलना नहीं की और जो सब कार्य हो रहे हैं, उन पर ध्यान नहीं दिया- यही भारत के पतन का एक प्रधान कारण है। हम इसका दण्ड पा चुके, अब हम यही और आगे न करें।

- दक्षिण भारत के ये कुछ प्राचीन मन्दिर और गुजरात के सोमनाथ के समान अन्य मन्दिर आपको सैकड़ों पुस्तकों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रचुर ज्ञान प्रदान करेंगे तथा जातीय इतिहास की भीतरी बातें समझने के लिए सूक्ष्म दृष्टि देंगे। देखो, इन मन्दिरों पर किस प्रकार सैकड़ों आक्रमणों और सैकड़ों पुनरुद्धारों के चिह्न विद्यमान हैं। इन मन्दिरों का भग्नावशेषों में से सदैव उद्धार होता रहा और वे हमेशा की तरह नये और सुदृढ़ बने रहे। यही है हमारे राष्ट्रीय जीवन-प्रवाह का स्वरूप।
- आगामी पचास वर्षों के लिए हमारा केवल एक ही विचार-केन्द्र होगा- और वह है हमारी महान् मातृभूमि भारत। दूसरे सब व्यर्थ के देवताओं को उस समय तक के लिए हमारे मन से लुप्त हो जाने दो। हमारा भारत, हमारा राष्ट्र–केवल यही एक देवता है जो जाग रहा है, जिसके हर जगह हाथ हैं, हर जगह पैर हैं, हर जगह कान हैं- जो सब वस्तुओं में व्याप्त है। दूसरे सब देवता सो रहे हैं। हम क्यों इन व्यर्थ के देवताओं के पीछे दौड़ें, और उस देवता की - उस विराट् की – पूजा क्यों न करें, जिसे हम अपने चारों ओर देख रहे हैं? जब हम उसकी पूजा कर लेंगे, तभी हम सभी देवताओं की पूजा करने योग्य बनेंगे।
- देश की आध्यात्मिक और लौकिक शिक्षा पर हमारा अधिकार अवश्य हो। क्या तुम्हारे ध्यान में यह बात आयी?....तुम्हें इस समय जो शिक्षा मिल रही है, उसमें कुछ अच्छाइयाँ अवश्य हैं, पर उसमें एक भयंकर दोष है जिससे ये सब अच्छी बातें दब गयी हैं। सब से पहली बात यह है कि उसमें मनुष्य बनाने की शक्ति नहीं है, वह शिक्षा नितान्त अभावात्मक है। अभावात्मक शिक्षा मृत्यु से भी बुरी है।
- भारत को छोड़ने के पहले मैंने उससे प्यार किया, और अब तो उसकी धूलि भी मेरे लिए पवित्र हो गयी है, उसकी हवा भी मेरे लिए पावन हो गयी है। वह अब एक पवित्र भूमि है, यात्रा का स्थान है, पवित्र तीर्थक्षेत्र है।
- यदि तुम अंग्रेजों या अमेरिकनों के बराबर होना चाहते हो, तो तुम्हें उनको शिक्षा देनी पडेगी और साथ ही साथ शिक्षा ग्रहण भी करनी पड़ेगी, और तुम्हारे पास अभी भी बहुतसी ऐसी बातें हैं जो तुम भविष्य में सैकड़ों वर्षों तक संसार को सिखा सकते हो। यह कार्य तुम्हें करना ही होगा।
- भारत का पतन इसलिए नहीं हुआ कि हमारे प्राचीन नियम और रीति-रिवाज खराब थे, वरन् इसलिए कि उनका जो उचित लक्ष्य है, उस पर पहुँचने के लिए जिन अनुकूल वातावरण एवं साधनों की आवश्यकता थी, उनका निर्माण नहीं होने दिया गया।
- जब आपको ऐसे लोग मिलेंगे, जो देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हैं और जो हृदय के सच्चे हैं-जब ऐसे लोग उत्पन्न होंगे, तभी भारत प्रत्येक दृष्टि से महान् होगा। मनुष्य ही तो देश के भाग्यविधाता हैं।
- मेरी राय में सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है और वही एक कारण है, जिससे हमारा पतन हुआ। कितना भी राजकारण उस

समय तक उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि भारतीय जनता फिर से अच्छी तरह सुशिक्षित न हो जाए, उसे अच्छा भोजन फिर न प्राप्त हो और उसकी अच्छी देखभाल न हो।

- धार्मिक भावना को बिना ठेस पहुँचाये जनता की उन्नति - यही ध्येयवाक्य अपने सामने रखो।
- शिक्षा, शिक्षा केवल शिक्षा। यूरोप के अनेक शहरों का भ्रमण करते समय वहाँ के गरीबों के भी आराम और शिक्षा का जब मैंने निरीक्षण किया, तो उसने मेरे देश के गरीबों की स्थिति की याद जगा दी और मेरी आँखों से आँसू गिर पड़े। इस अन्तर का कारण क्या है? उत्तर मिला, 'शिक्षा'। शिक्षा के द्वारा उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ और आत्मविश्वास के द्वारा मूल स्वाभाविक ब्रह्मभाव उनमें जागृत हो रहा है। मेरे जीवन की केवल एक महत्त्वाकांक्षा यह है कि मैं एक ऐसी संस्था एवं कार्यप्रणाली का संचालन करूँ, जो प्रत्येक घर तक श्रेष्ठ विचार ले जा सके और फिर स्त्री तथा पुरुष अपने भाग्य का निर्णय कर लें। वे जान लें कि उनके पूर्वजों तथा दूसरे देशों ने जीवन के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर क्या सोचा है। विशेषकर वे देखें कि दूसरे लोग अब क्या कर रहे हैं, और फिर वे निर्णय करें। हमारा काम रासायनिक द्रव्यों को एक साथ रखना है, रवे बनाने का कार्य प्रकृति अपने नियमों के अनुसार करेगी ही।
- भविष्य में क्या होनेवाला है यह मैं नहीं देखता, और न मुझे देखने की परवाह ही है। पर जिस प्रकार अपने सामने मैं जीवन प्रत्यक्ष रूप से देख रहा हूँ, उस प्रकार अपने मनश्चक्षु के सम्मुख मुझे एक दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है और वह है - मेरी यह प्राचीन मातृभूमि फिर से जग गयी है, वह सिंहासन पर बैठी है, उसमें नवशक्ति का संचार हुआ है, और वह पहले से अधिक गौरवान्वित हो गयी है। संसार के सम्मुख शान्ति एवं कल्याण की मंगलमय वाणी से उसके गौरव की घोषणा करो।

स्फुट

- शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहाँ आजन्म पडा रहकर गड़बड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन-निर्माण, 'मनुष्य'निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हों। यदि आप केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो आप पूरे ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करनेवाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं।

- जब तक सभ्यता नाम से पहचानी जानेवाली बीमारी अस्तित्व में है, तब तक दरिद्रता अवश्य रहेगी और इसलिए उसके दूर करने की आवश्यकता भी बनी रहेगी।
- 'शाइलाक्स' अर्थात् निर्दयी महाजनों के अत्याचारों के कारण पाश्चात्य देश कराह रहे हैं और पुरोहितों के अत्याचारों के कारण प्राच्य।
- सारा पश्चिम एक ज्वालामुखी के मुख पर बैठा है, जो कल ही फूट सकता है और टूक-टूक हो जा सकता है।
- एशिया ने सभ्यता की नींव डाली, यूरोप ने पुरुष का विकास किया और अमेरिका स्त्रियों तथा सर्वसाधारण जनता का विकास कर रहा है।
- प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक राष्ट्र को महान् होने के लिए निम्नलिखित तीन बातों की आवश्यकता है-
- अच्छाई की शक्तियों पर दृढ़ विश्वास,
- ईर्ष्या और सन्देह का अभाव,
- उन सभी की सहायता करना, जो अच्छे बनने तथा अच्छा कार्य करने का प्रयत्न करते हैं।
- अपने भाइयों का नेतृत्व करने का नहीं, वरन् उनकी सेवा करने का प्रयत्न करो। नेता बनने की इस क्रूर उन्मत्तता ने बड़े बड़े जहाजों को इस जीवनरूपी समुद्र में डुबो दिया है।
- हमारे स्वभाव में संगठन का सर्वथा अभाव है, पर इसे हमें अपने स्वभाव में लाना है। इसका महान् रहस्य है ईर्ष्या का अभाव। अपने भाइयों के मत से सहमत होने को सदैव तैयार रहो और हमेशा समझौता करने का प्रयत्न करो। यही है संगठन का पूरा रहस्य।
- मैं तुम सब से यही चाहता हूँ कि तुम आत्मप्रतिष्ठा, दलबंदी और ईर्ष्या को सदा के लिए छोड़ दो। तुम्हें पृथ्वी-माता की तरह सहनशील होना चाहिए। यदि तुम ये गुण प्राप्त कर सको, तो संसार तुम्हारे पैरों पर लोटेगा।
- स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुए बिना संसार के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है। एक पक्षी का केवल एक ही पंख के सहारे उड़ सकना असम्भव है।
- स्त्रियों में अवश्य ही यह क्षमता होनी चाहिए कि वे अपनी समस्याएँ अपने ढंग

से हल कर सकें। उनका यह कार्य न कोई दूसरा कर सकता है, और न किसी दूसरे को करना ही चाहिए। हमारी भारतीय महिलाएँ संसार की किन्हीं भी अन्य महिलाओं की तरह यह कार्य करने के योग्य हैं।

- मैं जानता हूँ कि वह जाति जिसने सीता को जन्म दिया – यह चाहे उनका स्वप्न ही क्यों न हो – स्त्रियों के लिए वह सम्मान रखती है, जो पृथ्वीतल पर अतुलनीय है।
- जब प्रत्येक बात में सफलता निश्चित रहती है, तब मूर्ख भी अपनी प्रशंसा पाने के लिए उठ खड़ा हो जाता है और कायर भी वीर की सी वृत्ति धारण कर लेते हैं, पर सच्चा वीर बिना एक शब्द मुँह से बोले कार्य करता जाता है। एक बुद्ध का आविर्भाव होने से पहले न जाने कितने बुद्ध हो चुके हैं।
- पश्चिमी राष्ट्रों ने राष्ट्रीय जीवन का जो आश्चर्यजनक ढाँचा तैयार किया है, उसे चरित्र के दृढ़ स्तम्भों का ही आधार है, और हम जब तक ऐसे स्तम्भों का निर्माण नहीं कर लेते, तब तक हमारा किसी भी शक्ति के विरुद्ध आवाज उठाना व्यर्थ है।
- काम इस प्रकार करते रहो, मानो पूरा कार्य तुममें से प्रत्येक पर निर्भर है। पचास शताब्दियाँ तुम्हारी ओर ताक रही हैं, भारत का भविष्य तुम पर अवलम्बित है। कार्य करते रहो।
- जो दूसरों का सहारा ढूँढ़ता है, वह सत्यस्वरूप भगवान् की सेवा नहीं कर सकता।
- मैं एक ऐसे नये मानव-समाज का संगठन करना चाहता हूँ जो ईश्वर पर हृदय से विश्वास रखता है और जो संसार की कोई परवाह नहीं करता।
- उपहास, विरोध औऱ फिर स्वीकृति - प्रत्येक कार्य को इन तीन अवस्थाओं में से गुजरना पड़ता है। जो व्यक्ति अपने समय ने आगे की बात सोचता है, उसके सम्बन्ध में लोगों की गलत धारणा होना निश्चित है।
- जीवन संघर्ष तथा निराशाओं का अविराम प्रवाह है.....। जीवन का रहस्य भोग में नहीं, पर अनुभवजनित शिक्षा में है। पर खेद है, जब हम वास्तव में सीखने लगते हैं, तभी हमें इस संसार से चल बसना पड़ता है।
- भलाई का मार्ग संसार में सब से अधिक ऊबड़-खाबड़ तथा कठिनाइयों से पूर्ण है। इस मार्ग से चलनेवालों की सफलता आश्चर्यजनक है, पर गिर पड़ना कोई आश्चर्यजनक नहीं। हजारों ठोकरे खाते हमें चरित्र को दृढ़ बनाना है। जीवन और मृत्यु, शुभ औऱ अशुभ, ज्ञान औऱ अज्ञान का यह मिश्रण ही माया अथवा जगत्-प्रपंच कहलाता है। तुम इस जाल के भीतर अनन्त काल तक सुख ढूँढ़ते रहो। तुम्हें उसमें सुख के साथ बहुत दु:ख तथा अशुभ भी मिलेगा। यह कहना कि मैं केवल शुभ ही लूँगा, अशुभ नहीं, निरा लड़कपन है-यह असम्भव है।
- यदि दिल में लगा हो, तो एक महामूर्ख भी किसी काम को पूर्ण कर सकता है। पर बुद्धिमान मनुष्य वह है, जो प्रत्येक कार्य को अपनी रुचि के कार्य में

परिणत कर सकता है। कोई भी काम छोटा नहीं है।

- केवल वे ही कार्य करते हैं, जिनका विश्वास है कि प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र में कार्य आरम्भ करते ही सहायता अवश्य मिलेगी।
- दृढ़ संकल्प कर लो कि तुम किसी दूसरे को नहीं कोसोगे,किसी दूसरे को दोष नहीं दोगे, पर तुम'मनुष्य'बन जाओ, खड़े होओ और अपने आपको दोष दो, स्वयं की ओर ही ध्यान दो, - यही जीवन का पहला पाठ है, यह सच्ची बात है।
- ध्यान रखो, संघर्ष ही इस जीवन में सब से बड़ा लाभ है। इसी में से हमें गुजरना पड़ता है – यदि स्वर्ग का कोई रास्ता है, तो वह नरक होकर जाता है। नरक से स्वर्ग - यही सदैव का मार्ग है। जब जीवात्मा परिस्थिति से लड़ता है और उसकी मृत्यु होती है, जब मार्ग में हजारों बार उसकी मृत्यु होने पर भी वह निडर होकर बार बार संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है, तभी वह महान् शक्तिशाली बन जाता है और उस आदर्श पर हँसता है जिसके लिए उसने संघर्ष किया था क्योंकि वह देखता है कि वह उस आदर्श से कहीं श्रेष्ठ है। मैं - मेरी आत्मा स्वयं ही – अन्तिम लक्ष्य – स्वरूप है, और कोई नहीं। इस संसार में ऐसी कौन सी वस्तु है जिसकी तुलना मेरी आत्मा के साथ की जा सके।

॥ समाप्त ॥